चीन-पाकिस्तान गठबंधन सीपैक और भारतीय सुरक्षा : एक विस्तृत विश्लेषण

शहबाज अली* https://doi.org/10.61703/RE-ps-Vyt-710-24-9

सारांश

चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (China's Belt and Road Initiative-BRI) एक वैश्विक बुनियादी ढांचा परियोजना है, जिसका उद्देश्य एशिया, यूरोप, और अफ्रीका के बीच कनेक्टिविटी और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना है। हालाँकि इस परियोजना का मुख्य फोकस आर्थिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना है, इसके साथ ही इसके रणनीतिक और सुरक्षा संबंधी प्रभाव भी गहरे और व्यापक हैं। यह शोध पत्र भारत की सुरक्षा पर BRI के प्रभावों का विश्लेषण करता है, जिसमें चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), भारतीय महासागर में चीनी नौसैनिक उपस्थिति, और उत्तर-पूर्वी भारत में उत्पन्न सुरक्षा चुनौतियाँ शामिल हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि BRI के माध्यम से चीन की विस्तारवादी नीतियाँ किस प्रकार भारत की सामरिक स्थिति और सुरक्षा को प्रभावित कर रही हैं।

प्रमुख शब्दावली: बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI),चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), भारतीय सुरक्षा

परिचय

चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) एक वैश्विक बुनियादी ढांचा और आर्थिक विकास परियोजना है, जिसकी शुरुआत 2013 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा की गई थी। BRI का उद्देश्य प्राचीन सिल्क रोड को पुनर्जीवित करना और एशिया, यूरोप, और अफ्रीका के देशों के बीच कनेक्टिविटी और व्यापारिक संबंधों को बढ़ाना है। इस परियोजना के तहत, चीन ने विभिन्न देशों में सड़कें, रेलवे, बंदरगाह, और अन्य बुनियादी ढांचे का विकास किया है। हालाँकि, इस आर्थिक पहल के पीछे चीन की भू-राजनीतिक और सुरक्षा संबंधी रणनीतियाँ भी छिपी हैं, जिनका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर चीन की शक्ति और प्रभाव को बढ़ाना है। भारत, जो इस परियोजना का हिस्सा नहीं है, को BRI के तहत चीन द्वारा की जा रही गतिविधियों से कई रणनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) और भारत की सुरक्षा

“BRI के तहत चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक है। यह गलियारा पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (PoK) से होकर गुजरता है, जो भारत और पाकिस्तान के बीच विवादित क्षेत्र है। CPEC के माध्यम से चीन ने पाकिस्तान में बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे का विकास किया है, जिसमें सड़कें, रेलवे, और ऊर्जा परियोजनाएँ शामिल हैं। इस गलियारे के निर्माण से पाकिस्तान में चीन की सैन्य उपस्थिति बढ़ी है, जो भारत के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा खतरा है।”(दीपराज :2019) इसके अलावा, CPEC ने भारत की संप्रभुता पर भी सवाल खड़े किए हैं, क्योंकि यह परियोजना विवादित क्षेत्रों में हो रही है। इस परियोजना के माध्यम से चीन पाकिस्तान के साथ अपने संबंधों को और अधिक मजबूत बना रहा

*अतिथि व्याख्याता, शासकीय वी.वाई.टी. पीजी ऑटोनॉमस कॉलेज, दुर्ग, छत्तीसगढ़

है, जिससे क्षेत्र में शक्ति संतुलन भारत के विरुद्ध झुक रहा है। "*CPEC के माध्यम से पाकिस्तान में चीनी निवेश ने पाकिस्तान की सेना और चीन के बीच सैन्य सहयोग को भी बढ़ावा दिया है, जिससे भारत के लिए सुरक्षा चुनौतियाँ और बढ़ गई हैं। इस गलियारे के माध्यम से चीन ने ग्वादर बंदरगाह को विकसित किया है, जो अरब सागर के तट पर स्थित है और भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा उत्पन्न करता है। इस बंदरगाह का उपयोग चीन अपनी नौसैनिक गतिविधियों के लिए कर सकता है, जिससे भारत की समुद्री सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।*" (वांग, 2016 पृ)

उत्तर-पूर्वी भारत और तिब्बत में सुरक्षा चुनौतियाँ

BRI के तहत चीन ने तिब्बत और अरुणाचल प्रदेश से सटे क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का तेजी से विकास किया है। चीन द्वारा इस क्षेत्र में सड़कें, रेलवे, और सैन्य ठिकानों का निर्माण किया गया है, जिससे भारत के लिए नए सुरक्षा खतरे उत्पन्न हुए हैं। इसने भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियाँ पैदा कर दी हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ पहले से ही सीमा विवाद और सैन्य तनाव है। चीन की इन गतिविधियों ने भारत की सैन्य तैयारियों और रणनीतिक नियोजन को और अधिक जटिल बना दिया है। (मनीष, 2021) तिब्बत में चीन द्वारा बनाए जा रहे बुनियादी ढांचे, जैसे कि ल्हासा से निंगची तक की रेलवे लाइन, ने भारत के लिए नए सुरक्षा खतरे उत्पन्न किए हैं। निंगची अरुणाचल प्रदेश के करीब है, जिसे चीन अपना हिस्सा मानता है। इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति ने भारत की सुरक्षा चिंताओं को और बढ़ा दिया है। इसके अलावा, चीन द्वारा तिब्बत में बनाए जा रहे हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट्स ने ब्रह्मपुत्र नदी के प्रवाह पर भी प्रभाव डाला है, जिससे भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में जल सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हुआ है।

कूटनीतिक और आर्थिक चुनौतियाँ

BRI के तहत चीन ने दक्षिण एशिया के अन्य देशों, जैसे नेपाल, बांग्लादेश, और श्रीलंका के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया है। इससे क्षेत्र में भारत की कूटनीतिक स्थिति कमजोर हुई है। चीन ने इन देशों को भारी कर्ज और निवेश प्रदान किया है, जिससे वे आर्थिक रूप से चीन पर निर्भर हो गए हैं। इस आर्थिक निर्भरता का उपयोग चीन अपनी रणनीतिक और सुरक्षा नीतियों को आगे बढ़ाने के लिए कर सकता है, जो भारत के लिए चिंता का विषय है।

नेपाल में, चीन ने BRI के तहत बड़े पैमाने पर निवेश किया है, जिससे नेपाल की अर्थव्यवस्था पर चीन का प्रभाव बढ़ गया है। यह स्थिति भारत के लिए चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि नेपाल को पारंपरिक रूप से भारत के प्रभाव क्षेत्र में माना जाता था। अब, चीन के साथ घनिष्ठ होते संबंधों के कारण, नेपाल की नीतियाँ भारत की सुरक्षा के लिए और अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं। इसी तरह, बांग्लादेश और म्यांमार में भी चीन की बढ़ती उपस्थिति ने भारत की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा दिया है।

साइबर सुरक्षा पर प्रभाव

BRI के तहत डिजिटल सिल्क रोड के माध्यम से चीन ने संचार और डिजिटल नेटवर्क में अपनी उपस्थिति बढ़ाई है। इससे साइबर सुरक्षा के खतरे बढ़ गए हैं, क्योंकि चीन अपनी तकनीकी क्षमताओं का उपयोग भारत के खिलाफ साइबर हमले करने के लिए कर सकता है। इसके अलावा, चीन द्वारा विकसित की जा रही 5G प्रौद्योगिकी और अन्य डिजिटल अवसंरचना परियोजनाओं ने भारत की साइबर सुरक्षा के लिए नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं।

भारत में, चीनी कंपनियों द्वारा विकसित किए गए उपकरणों और सेवाओं के उपयोग ने साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों के बीच चिंताएँ बढ़ा दी हैं। यह चिंता तब और बढ़ जाती है जब इन उपकरणों के माध्यम से संवेदनशील जानकारी और डेटा का एक्सेस चीनी

सरकार को मिल सकता है। इस प्रकार, BRI के तहत डिजिटल परियोजनाओं ने भारत की साइबर सुरक्षा को एक नई दिशा में चुनौती दी है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा पर संभावित खतरों का सामना करना पड़ रहा है।

भारत ने चीन की BRI का मुकाबला करने के लिए कई रणनीतिक और कूटनीतिक कदम उठाए हैं।

एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC)

एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (Asia-Africa Growth Corridor- AAGC) भारत और जापान की संयुक्त पहल है, जो अफ्रीका और एशिया के देशों को जोड़ने का लक्ष्य रखती है। इस पहल का उद्देश्य BRI का एक वैकल्पिक विकल्प प्रदान करना है, जो इन क्षेत्रों में टिकाऊ विकास और व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा दे सके। AAGC के माध्यम से भारत और जापान ने विभिन्न बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, क्षमता निर्माण और कनेक्टिविटी परियोजनाओं में निवेश किया है, जिससे इन क्षेत्रों के देशों को चीन की आर्थिक निर्भरता से मुक्त किया जा सके।

इंडो-पैसिफिक रणनीति

“भारत ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अपनी रणनीतिक भागीदारी को मजबूत करने के लिए अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ "क्वाड" (Quadrilateral Security Dialogue) समूह का गठन किया है। इस समूह का उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन के प्रभाव का मुकाबला करना और एक स्वतंत्र, मुक्त और समृद्ध क्षेत्र को बढ़ावा देना है। क्वाड की भागीदारी से भारत ने अपनी समुद्री सुरक्षा क्षमताओं को बढ़ाया है और चीन के विस्तारवादी रुझानों का संतुलन बनाने में मदद की है।(मनीष: 2021)

चाबहार पोर्ट परियोजना

चाबहार पोर्ट परियोजना भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक निवेश है, जो ईरान में स्थित है। इस पोर्ट के माध्यम से भारत अफगानिस्तान और मध्य एशिया के देशों तक सीधी पहुंच प्राप्त कर सकता है, जिससे पाकिस्तान को बाईपास किया जा सकता है। यह चीन के ग्वादर पोर्ट का एक प्रमुख विकल्प है, जो चीन-पाकिस्तान इकॉनॉमिक कॉरिडोर (CPEC) का हिस्सा है। चाबहार पोर्ट Chabahar Port के विकास से भारत ने अपनी ऊर्जा और व्यापारिक आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत किया है और चीन की BRI के प्रभाव को सीमित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। (मनीष: 2021)

नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी

भारत ने अपनी नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (Neighbourhood First Policy)के तहत अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया है। इस नीति के तहत भारत ने नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव और भूटान के साथ कनेक्टिविटी, व्यापार, ऊर्जा और बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में कई परियोजनाएं शुरू की हैं। इन देशों के साथ संबंधों को मजबूत करके, भारत ने इन देशों को चीन के प्रभाव से दूर रखने का प्रयास किया है (शर्मा.के.:2022)

क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर सक्रियता

भारत ने विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर अपनी भूमिका को बढ़ाया है, जैसे कि ब्रिक्स, आसियान, सार्क और G-20 । इन मंचों पर भारत ने वैश्विक विकास और व्यापार के मुद्दों पर अपनी स्थिति को मजबूती से रखा है और चीन के प्रभाव को चुनौती दी

है। इसके अलावा, भारत ने अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य एशिया के देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को भी मजबूत किया है।

कनेक्टिविटी परियोजनाएँ

भारत ने अपने उत्तर-पूर्वी राज्यों को दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ने के लिए विभिन्न कनेक्टिविटी परियोजनाओं पर काम किया है। जैसे कि भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, जो मणिपुर के मोरेह से म्यांमार के तामू होते हुए थाईलैंड तक जाएगा। इन परियोजनाओं के माध्यम से भारत ने अपने पूर्वोत्तर क्षेत्रों के विकास को गति दी है और BRI के मुकाबले में एक वैकल्पिक व्यापार मार्ग प्रदान किया है।

वैश्विक कूटनीतिक प्रयास

भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर BRI के प्रति अपने विरोध को स्पष्ट किया है। भारत ने BRI के अंतर्गत आने वाली चीन-पाकिस्तान इकॉनॉमिक कॉरिडोर (CPEC) का कड़ा विरोध किया है, क्योंकि यह भारतीय संप्रभुता का उल्लंघन करता है। भारत ने अपने कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से दुनिया के अन्य देशों को भी BRI के खतरों के बारे में जागरूक किया है और उन्हें इसके दीर्घकालिक प्रभावों के प्रति सतर्क किया है।

निष्कर्ष

BRI ने भारत की सुरक्षा पर कई महत्वपूर्ण प्रभाव डाले हैं। इस परियोजना के तहत चीन द्वारा किए जा रहे बुनियादी ढांचे के विकास और सामरिक गतिविधियों ने भारत की सामरिक स्थिति और सुरक्षा चिंताओं को और अधिक गंभीर बना दिया है। विशेष रूप से CPEC, भारतीय महासागर में चीनी उपस्थिति, और उत्तर-पूर्वी भारत में उत्पन्न चुनौतियाँ, भारत की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे के रूप में उभरी हैं।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत को अपनी सुरक्षा रणनीतियों को और अधिक मजबूत और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों पर कूटनीतिक प्रयासों को तेज करके भारत को BRI के खतरों का सामना करने की दिशा में काम करना होगा। भारत को न केवल सैन्य और सामरिक दृष्टिकोण से, बल्कि बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) और भारतीय सुरक्षा चुनौतियों के बीच का संबंध जटिल और बहुआयामी है। बीआरआई के तहत चीन द्वारा विकसित किए जा रहे बुनियादी ढांचे और निवेश परियोजनाओं से भारत के पड़ोसी देशों में चीन का प्रभाव बढ़ रहा है, जो भारत के लिए रणनीतिक और भू-राजनीतिक चिंताओं का कारण बनता है। विशेष रूप से, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) भारत के लिए एक गंभीर सुरक्षा चुनौती पेश करता है, क्योंकि यह भारत के विवादित क्षेत्रों से होकर गुजरता है और चीन-पाकिस्तान के संबंधों को और मजबूत करता है।

इसके अलावा, बीआरआई के माध्यम से चीन की आर्थिक और सैन्य उपस्थिति में वृद्धि से क्षेत्रीय शक्ति संतुलन बदल रहा है, जिससे भारत को अपनी सुरक्षा और रणनीतिक हितों की पुन: समीक्षा करने की आवश्यकता है। भारत को न केवल अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपने कूटनीतिक प्रयासों को तेज करना चाहिए, ताकि वह अपनी सुरक्षा और संप्रभुता की रक्षा कर सके। अंततः, बीआरआई भारत के लिए न केवल एक आर्थिक चुनौती है, बल्कि एक सुरक्षा संकट भी है, जिसका समाधान केवल बहुआयामी रणनीति और मजबूत राष्ट्रीय नीति के माध्यम से ही किया जा सकता है।

वही भारत ने चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का प्रभावी मुकाबला करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है। कनेक्टिविटी परियोजनाओं, रणनीतिक साझेदारियों, क्षेत्रीय सहयोग, और वैश्विक कूटनीति के माध्यम से, भारत ने चीन के आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव को संतुलित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। हालांकि, इस प्रतिस्पर्धा में भारत को अपने प्रयासों को निरंतर बनाए रखना होगा और अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को और भी अधिक मजबूत करना होगा ताकि BRI का प्रभाव कम किया जा सके।

संदर्भ

Dipnjay(2019) . Belt and road initiative grand strategy.

Manish (2021) .The Belt and The Road Initiative Implications for India.Pentagon press, नयी दिल्ली।

Sharma.K.(2022).Belt and road initiative and South Asia, Routledge

Thakur S(2021) .Belt and road initiative : Chinese nationalism chinese colonialism,r son publication

Zhang W, Alon A , and Lattemann C .(2018) : *China's Belt and Road Initiative: Changing the rules of globalization*. Palgrav Mcmillan, ,